आधुनिक संस्कृत नाटक एवं रंगमंच–एक अध्ययन

(1990 ईस्वी से अब तक के चयनित नाटकों का नाट्यषास्त्रीय एवं आधुनिक रंगमंच के सन्दर्भ में)

संस्कृत विषय में पी–एच0 डी0 की उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की

प्रस्तावित रूपरेखा

2015

निर्देषिका

डॉ0 निशीथ गौड़
अिस. प्रोफेसर
संस्कृत विभाग, कला संकाय

डी०ई०आई० दयालबाग़, आगरा

षोधार्थिनी

कृष्णा
एम0ए0 एवं एम0फिल्0
संस्कृत

अध्ययन क्षेत्र– संस्कृत साहित्य

विभागाध्यक्ष

प्रो० (श्रीमती) उर्मिला आनन्द

संस्कृत विभाग, कला संकाय

संकाय प्रमुख

प्रो0 रागिनी रॉय

कला संकाय

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा–282005

आधुनिक संस्कृत नाटक एवं रंगमंच–एक अध्ययन

(1990 ईस्वी से अब तक के चयनित नाटकों का नाट्यषास्त्रीय एवं आधुनिक रंगमंच के सन्दर्भ में)

नाटक जीवन की अनुकृति है और जीवन स्वयं में एक प्रत्यक्ष नाट्यानुभूति। एक महान नाटककार ने कहा भी है कि यह संसार एक रंगमंच है और हम सब इस विशाल रंगमंच में अपनी–अपनी भूमिका निभाते हैं। जीवन की यह जीवंतता और साक्षात्कारी नाटकीय भूमिका मनुष्य जीवन को प्रतिपल चुनौतीपूर्ण बनाकर जीवन व्यतीत करने की जिज्ञासा उत्पन्न करती है। नाटक में परिवर्तित जीवन का यह छोटा संस्करण रंगमंच के अनेक आयामों को स्पर्श करता हुआ मनुष्य जीवन को एक नया विचार प्रदान कर गहन विचार के साथ सोचने पर विवश कर देता है। प्रेक्षागृह की दीवारों से टकराकर गूंजती हुई आवाज, नेपथ्य से आते हुए संगीत के स्वर और मंच पर पात्रों की हलचलों से बनता वातावरण एक नए स्वप्न लोक का सृजन करता है। यह स्वप्न लोक का अहसास हमें यथार्थ से पृथक् नहीं करता बल्कि हमारे जीवनानुभव के लिए एक ऐसी पृष्ठभूमि तैयार करता है जिस पर हमारे भाव, विचार, जीवन–दृष्टि प्रतिस्थापित होती है। यही कारण है कि साहित्य की समस्त विधाओं में नाटक ही एक मात्र ऐसी विधा है जो पाठ्य और दृश्यगत दोनों आयामों में ढलकर अनुभूतियों को अधिक मार्मिक और अधिक सम्प्रेषणीय बनाने में समर्थ है।

नाटक दृश्यगत विधा है इसलिए उसकी जीवंतता और सार्थकता रंगमंच पर प्रदर्शित होने में है। साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में नाटक ही वह सामूहिक कला है जो एक साथ अनेक लोगों से सीधा साक्षात्कार करता है और यह मंचीय

प्रस्तुतीकरण के अभाव में संभव नहीं है इसलिए नाटककार रंगमंच को ध्यान में रखते हुए ही नाट्य सृजन करता है।

रंगमंच दो शब्दों से मिलकर बना है– रंग और मंच। रंग शब्द का अर्थ है– नाच और नृत्य। मंच शब्द का अर्थ है– ऊँचा बना हुआ मण्डप। इस प्रकार रंगमंच का अर्थ हुआ वह उच्च स्थान जहाँ पर रंगकर्मी नाच, नृत्य, नाटक आदि अभिनय कलाओं को प्रदर्शित करते है।

भरत के नाट्यशास्त्र में 'रंगपूजा' शब्द का अनेक स्थलों पर उल्लेख है। स्वाभाविक रूप से इसका शाब्दि अर्थ 'मंच–पूजा' ही होता है। इस शब्द का अर्थ भरत ने मंच से लिया है–

''सर्त्यलोकेऽप्यर्थवेदः शुभां पूजामवाप्स्यति।

अपूजयित्वा रंगं तु नैव प्रेक्षा प्रवर्तते।।''(ना.शा. प्रथम अध्याय)

जितना आनन्द दृश्य काव्य से प्राप्त होता है शायद उतना किसी और काव्य से न के बराबर ही होता है। सदैव से ही मेरी रूचि दृश्यकाव्य में अधिक रही है इसलिए इस दृश्यकाव्य के आनन्द को प्राप्त करने हेतु इस विषय में गहनता से विचार विमर्श करने की जिज्ञासा हुई इस कारण मैंने अपने शोध का विषय 'आधुनिक संस्कृत नाटक एवं रंगमंच–एक अध्ययन' को बनाया।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन– नाटक एक दृश्यकाव्य है जिसमें आनन्द अति शीघ्रतम प्राप्त होता हैं अतः अनेक शोधार्थियों ने नाटकों को अपना शोध विषय बनाया यथा–

1. डॉ0 जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल के निर्देशन में राजवीर सिंह द्वारा 'संस्कृत नाटकों में वस्तु और उसका विकास' (डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय)
2. डॉ0 सत्यनारायण मिश्र के निर्देशन में कृष्णचन्द्र द्वारा 'स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत रूपकों का समीक्षात्मक अध्ययन' (डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय)
3. डॉ0 रघुवीर शास्त्री के निर्देशन में निरुपमा शर्मा द्वारा 'संस्कृत नाटकों में लोकधर्मी एवं लोकमंचीय तत्त्व' (डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय)
4. प्रो0 मंजूरानी भट्‌टनागर के निर्देशन में नीता कुमारी द्वारा 'आधुनिक संस्कृत नाटकों में युग चेतना' (दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्‌यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी))
5. प्रो0 अगम कुलश्रेष्ठ के निर्देशन में स्वाति कुलश्रेष्ठ द्वारा 'गुराजतप्रान्तीय स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत रूपकों का समीक्षात्मक अध्ययन' (दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्‌यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
6. प्रो0 मीरा शर्मा के निर्देशन में नीरज तिवारी द्वारा 'बीसवीं शताब्दी स्वतन्त्रता पूर्व के प्रमुख संस्कृत रूपकों का समाजषास्त्रीय अध्ययन' (दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्‌यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

अतः विषय चयन करने से पूर्व जानकारी के लिए मैने विविध विश्वविद्यालयों के ग्रन्थालयों, शोध–प्रबन्ध, इन्टरनेट आदि का गहन अन्वेषण किया किन्तु अध्येय नाटकों में रंगमंच विषय को लेकर कोई कार्य मेरे संज्ञान में नहीं आया है, इसीलिए मैंने 'आधुनिक संस्कृत नाटक एवं रंगमंच एक अध्ययन' इस विषय का चयन किया।

उद्‌देष्य एवं प्रासंगिकता–

1. प्रस्तुत शोधकार्य के द्वारा आधुनिक नाटकों में रंगमंचीय तत्त्वों का निरूपण करना।
2. संस्कृत साहित्य को रंगमंचीय दृष्टि से नवीन दिशा प्रदान करना।
3. रंगमच में होते विकास क्रम का ज्ञान करना।
4. दृश्यगत काव्य में रूचि रखने वाले जिज्ञासुओं की जिज्ञासा की तृप्ति।
5. अध्येय नाटककारों के जीवन पर दृष्टि डालना।
6. अध्येय नाटकों के प्रयोग से जुड़े तत्त्वों का निष्कर्ष निकालना।

षोधदृष्टि–

1. शोध में नाट्य के स्वरूप को निर्धारण करते हुये संस्कृत नाटक का स्वरूप एवं परम्परा तथा आधुनिक संस्कृत नाटकों का स्वरूप एवं परम्परा का निरूपण करना।
2. रंगमंच का शास्त्रीय दृष्टि से अवलोकन करना तथा रंगमंच विधान का वर्णन करना।
3. आधुनिक संस्कृत नाटक एवं नाटककारों का ज्ञान प्राप्त करना।
4. आधुनिक संस्कृत नाटकों में रंगमंच का निरूपण करना तथा उसका नाट्शास्त्रीय दृष्टि से विवेचन करना।
5. आधुनिक संस्कृत नाटकों का तकनीकी एवं व्यावहारिक दृष्टि से विवेचन करना।
6. अभिनय की दृष्टि से आधुनिक संस्कृत नाटकों की व्याख्या करना।
7. आधुनिक संस्कृत नाटकों में नाट्य उपकरणों का वर्णन करना।
8. संस्कृत रंगमंच का हिन्दी एवं पाश्चात्य रंगमंच के साथ तुलनात्मक अध्ययन।
9. शोध कार्य की उपादेयता का वर्णन करना।

10.शोध कार्य के लिए सहायक ग्रन्थ सूची का विवरण देना। इत्यादि

षोध प्रविधि– इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक एवं आगमन विधि का प्रयोग करते हुए मैं अपना शोध कार्य करूँगी, जिसमें अध्येय नाटकों में रंगमंचीय तत्त्वों का विश्लेषण किया जाएगा।

शोध की पूर्व अध्ययन–सामग्री के रूप में मूल अध्येय नाटक, ग्रन्थालयों में उपलब्ध सन्दर्भ–ग्रन्थ, आलोचनात्मक–ग्रन्थ, विश्वकोष, शब्दकोष एवं शोध–पत्रिकाओं का अध्ययन किया जाएगा। इसके साथ ही इन्टरनेट, ई–लाइब्रेरी, ई–बुक्स, ई–गूगल आदि के माध्यम से प्राप्त सामग्री का भी अध्ययन किया जाएगा।

शोध के न्यायदर्श के रूप में अध्येय नाटकों में से रंगमंचीय तत्त्वों को खोजकर उद्धरण–कार्ड बनाए जाएंगे, जिसके माध्यम से शोध को अग्रिम दिशा प्रदान की जाएगी, साथ ही रंगमंचीय तत्त्वों का समीक्षात्मक अध्ययन करके मैं इस तथ्य को स्पष्ट कर पाऊँगी, कि अध्येय नाटककारों ने स्वप्रणीत नाटकों में रंगमंचीय तत्त्वों का कितनी सफलतापूर्वक प्रयोग किया है और वह किस प्रकार से एक पाठक को आनन्दित कर सकते हैं। इसी शृखंला में सन्दर्भ सूची को प्रस्तुत किया जाएगा।

अतः मेरा विश्वास है कि इस कार्य के द्वारा रंगमंच पर सफलतापूर्वक विचार विमर्श कर सकूँगी । अतः आशा है कि विज्ञजन मुझे इस विषय पर शोध कार्य करने की अनुमति प्रदान कर मेरा मार्ग प्रशस्त करेंगे।

इस दृश्यकाव्य के आनन्द को प्राप्त करने तथा इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए मैंने अग्रलिखित नाटकों को अपने शोध कार्य का आधार बनाया है–

नाटक	नाटककार
1. गुरूदक्षिणानाटकम्	डॉ0 गौरीनाथ दीक्षित, 1990
2. आश्वासनम् नाटकम्	डॉ0 ओम प्रकाश शास्त्री, 1993
3. सत्प्रेरणा नाटकम्	प्रो0 इच्छाराम द्विवेदी, 1995
4. स्नेहसौवीरम्	डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी, 1997
5. भर्तृहरि–निर्वेदनाटकम्	हरिहरोपाध्याय, 1998
6. सीताभ्युदय नाटकम्	प्रो0 राम जी उपाध्याय, 1998
7. जीवनपर्व नाटकम्	डॉ0 ओम प्रकाश पाण्डेय 1998
8. मेनकाविश्वामित्रम्	डॉ0 हरिनारायण दीक्षित, 1998
9. राष्टं भवति सर्वस्वम्	डॉ0 कीर्तिवल्लभः शक्टा, 2000
10. शम्बूकाभिषेकम् नाटकम्	प्रो0 राम जी उपाध्याय, 2001
11. रूपक पंचकम् (पाँच नाटकों का संग्रह)	डॉ0 गोस्वामी बलभद्र प्रसाद, 2002
12. सैरन्ध्री नाटकम्	डॉ गोस्वमी बलभद्र प्रसाद, 2005
13. नाट्यामृतम्	डॉ0 कैलाशराम द्विवेदी, 2005
14. दायाद्याम्	डॉ0 अशोक कुमार डबराल, 2007
इत्यादि	

इस शोध कार्य को अग्रलिखित अध्यायों में विभाजित किया जाएगा–

आधुनिक संस्कृत नाटक एवं रंगमंच–एक अध्ययन

(1990 ईस्वी से अब तक के चयनित नाटकों का नाट्यषास्त्रीय एवं आधुनिक रंगमंच के सन्दर्भ में)

प्रथम अध्याय– नाटक एवं रंगमंच का स्वरूप

1. संस्कृत नाटक : स्वरूप एवं परम्परा
2. आधुनिक संस्कृत नाटक : स्वरूप एवं परम्परा
3. रंगमंच का शास्त्रीय स्वरूप एवं आधुनिक रंगमंच
4. रंगमंचीय विधान

द्वितीय अध्याय– अध्येय नाटक एवं नाटककारों का परिचय

1.	गुरूदक्षिणानाटकम्	डॉ0 गौरीनाथ दीक्षित, 1990
2.	आश्वासनम् नाटकम्	डॉ0 ओम प्रकाश शास्त्री, 1993
3.	सत्प्रेरणा नाटकम्	प्रो0 इच्छाराम द्विवेदी, 1995
4.	स्नेहसौवीरम्	डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी, 1997
5.	भर्तृहरि–निर्वेदनाटकम्	हरिहरोपाध्याय, 1998
6.	सीताभ्युदय नाटकम्	प्रो0 राम जी उपाध्याय, 1998
7.	जीवनपर्व नाटकम्	डॉ0 ओम प्रकाश पाण्डेय 1998
8.	मेनकाविश्वामित्रम्	डॉ0 हरिनारायण दीक्षित, 1998
9.	राष्टं भवति सर्वस्वम्	डॉ0 कीर्तिवल्लभः शक्टा, 2000

10. शम्बूकाभिषेकम् नाटकम् — प्रो0 राम जी उपाध्याय, 2001

11. रूपक पंचकम् (पाँच नाटकों का संग्रह) डॉ0 गोस्वामी बलभद्र प्रसाद, 2002

12. नाट्यामृतम् — डॉ0 कैलाशराम द्विवेदी, 2005

13. सैरन्ध्री नाटकम्, — डॉ0 गोस्वामी बलभद्र प्रसाद, 2005

14. दायाद्याम् — डॉ0 अशोक कुमार डबराल, 2007

तृतीय अध्याय– अध्येय नाटकों का नाट्यषास्त्रीय अध्ययन

1. वस्तु
2. नेता
3. रस एवं भावाभिव्यक्ति
4. नाट्य वृत्तियाँ

चतुर्थ अध्याय– अध्येय नाटकों का तकनीकी एवं व्यावहारिक

1. नाटक की रंगभूमि
2. रंग लेपन एवं साज सज्जा
3. रंगमंच सज्जा
4 प्रकाश व्यवस्था
5. ध्वनि एवं संगीत प्रयोग
6. दृश्य योजना
7 निर्देशन
8. प्रदर्शन शैली

पंचम अध्याय– अध्येय नाटकों में अभिनय एवं उपकरण प्रयोग

1.अभिनय– आंगिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक इत्यादि

2. संवाद संप्रेषणीयता

3. नाटकों में नाट्य उपकरणों का प्रयोग

षष्ठ अध्याय– संस्कृत एवं आधुनिक रंगमंच का तुलनात्मक अध्ययन

1. संस्कृत एवं आधुनिक रंगमंच
2. संस्कृत एवं पाश्चात्य रंगमंच

उपसंहार– अध्ययन का निष्कर्ष एवं प्रासंगिकता

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

आधार ग्रन्थ

1. गुरूदक्षिणानाटकम्, डॉ0 गौरीनाथ दीक्षित, भारतीय विद्या प्रकाशन दिल्ली, 1990
2. आश्वासनम् नाटकम्, डॉ0 ओम प्रकाश शास्त्री, श्रुत प्रकाशन, लखनऊ1993
3. सत्प्रेरणा नाटकम्, प्रो0 इच्छाराम द्विवेदी, वाणी विहार, नई दिल्लह 1995
4. स्नेहसौवीरम्, डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी नाग प्रकाशक जवाहर नगर दिल्ली, 1997
5. भर्तृहरि–निर्वेदनाटकम्, हरिहरोपाध्यय नाग प्रकाशक, 1998
6. सीताभ्युदय नाटकम्, प्रो0 राम जी उपाध्याय, भारतीय संस्कृति संस्थान, वाराणसी 1998
7. जीवनपर्व नाटकम्, डॉ0 ओम प्रकाश पाण्डेय, पेनमैंस पब्लिशर्स प्रेम नगर, दिल्ली 1998
8. मेनकाविश्वमित्र, हरिनारायण दीक्षित, ईस्टर्न बुक लिंकर्स1998
9. राष्ट्रं भवति सर्वस्वम्, डॉ0 कीर्तिवल्लभः शक्टा, डॉ0 कीर्तिवल्लभः शक्टा 2000
10. शम्बूकाभिषेकम् नाटकम्, प्रो0 राम जी उपाध्याय, भारतीय संस्कृत संस्थान वाराणसी 2001
11. रूपक पंचकम् (पाँच नाटकों का संग्रह) डॉ0 गोस्वामी बलभद्र प्रसाद, आशोक नगर नैनीताल मार्ग, बरेली 2002
12. सैरन्ध्री नाटकम्, डॉ0 गोस्वामी बलभद्र प्रसाद, आशोक नगर नैनीताल मार्ग बरेली, 2005

13.नाट्यामृतम्, डॉ0 कैलाशनाथ द्विवेदी, कुसुमकुलाय शास्त्रीनगर, अजीतमल (औरैया), 2005

14.दायाद्याम्, डॉ0 अशोक कुमार डबराल, पन्नी प्रकाशन, दिल्ली 2007

सहायक ग्रन्थ–

1. डॉ0 रमाकान्त त्रिपाठी, संस्कृत नाट्य सिद्धान्त, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, 1969
2. डॉ पारसनाथ द्विवदी, नाट्यशास्त्र का इतिहास, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, 1995
3. डॉ0 वी0 एल0 राजपूरोहित, संस्कृत नाटक और रंगमंच, शिवालिक प्रकाशन दिल्ली, 2003
4. डॉ0 हरिराम आचार्य, संस्कृत नाट्य : प्रस्तुति पक्ष, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर 2005
5. डॉ0 लक्ष्मीनारायण, रंगमंच और नाटक की भूमिका, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1965
6. डॉ0 मदन मोहन भारद्वाज, भारतीय नाट्य परम्परा और रंगभूमि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस जयपुर
7. हृषीकेश, रंगमंच के जन्मतन्त्र, राजकमल प्रकाशन
8. हेनरी इक्यूवेन्स, भारत के प्राचीन नाटक, मोती लाल बनारसी दास
9. केशव राव मुसलगॉवकर, संस्कृत नाट्य मीमांसा, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली 2003
10. महेशानन्द, रंगमंच के सिद्धान्त, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
11. नेमिचन्द्र जैन, रंग दर्शन, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली

12.राधावल्लभ त्रिपाठी, भारतीय नाट्शास्त्र की परम्परा एवं विश्व रंगमंच, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली 1998
13.रामजी उपाध्याय, आधुनिक संस्कृत नाटक : नए तथ्य नए इतिहास, संस्कृत परिषद्, सागर विश्वविद्यालय, सागर
14.रामजी उपाध्याय, नाट्यशास्त्रीय प्रयोग विज्ञान, भारतीय संस्कृति संस्थान नारीबारी, इलाहाबाद 1981
15.रामसागर त्रिपाठी, भारतीय नाट्यशास्त्र और रंगमंच, अशोक प्रकाशन, दिल्ली 1978
16.रामेश राजहंस, नाट्य प्रस्तुतिः एक परिचय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 1989
17.संगीता गुन्देचा, भास का रंगमंच, न्यु भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली 2004

षब्दकोष

1. .पारिजात कोशः, डॉ ईश्वरचन्द्र शर्मा, परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली, 2004
2. संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली 1966, 1969
3. भाषा शब्दकोश, डॉ रामश र शुक्ल, रामनारायण लाल बेनीप्रसाद रसाल इलाहाबाद 1971
4. संस्कृत शब्दार्थकौस्तुभ, स्वर्गीय चतुर्वेदी द्वारका, रामनारायण लाल प्रसाद शर्मा, ए०ए० तथा पण्डित तरिणीश झा, व्याकरण वेदान्ताचार्य, इलाहाबाद 1959

Websites-

1-Shodhganga. inflibnet.ac.in

2-www.sanskrit. nic.in/theses-modified/DirectoryV/Index.htm

3-pdfsearch. asia/shodhgangotri.html